Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

Original Article

दिविक रमेश की उपदेशात्मक बालकविताएँ

डॉ. बबन चौरे[1], शेळके दत्तात्रय सोन्याबापु [2]
[1]शोध निर्देशक कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, पाथर्डी
[2]शोध छात्र न्यू आर्टस्, कॉमर्स अँड सायन्स कॉलेज (स्वायत), अहिल्यानगर

Manuscript ID:
JRD -2026-180753
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 7
Pp. 256-259
July- 2026
Submitted: 16 June. 2026
Revised: 26 June. 2026
Accepted: 11 July. 2026
Published: 31 July. 2026

सारांश

प्रस्तुत शोध में हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं बालसाहित्यकार दिविक रमेश की उपदेशात्मक बाल कविताओं का अध्ययन किया गया है। उनकी कविताओं में सादगी, लोकजीवन, प्रकृति, मानवीय संवेदना और सामाजिक सरोकार प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। उनकी उपदेशात्मक कविताएँ बच्चों को नैतिक मूल्यों, सत्य, समानता, सहयोग और सकारात्मक सोच की शिक्षा देती हैं। कवि ने बाल मजदूरी, आर्थिक विषमता, शिक्षा से वंचित बच्चे, पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं तथा पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। 'लोटा-लोटी' में समानता, 'वह बच्चा' में शिक्षा के अधिकार और आर्थिक विषमता तथा 'तोड़ ना जाए कोई पेड़' में वृक्षों एवं पर्यावरण के महत्व का संदेश दिया गया है। उनकी कविताएँ बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उन्हें जीवनोपयोगी एवं नैतिक शिक्षा प्रदान करती हैं।

मुख्य शब्द: *दिविक रमेश, बाल कविता, उपदेशात्मक कविता, बाल साहित्य, नैतिक शिक्षा, बाल मजदूरी, बाल शिक्षा, सामाजिक विषमता, समानता, पर्यावरण संरक्षण, लोकजीवन, मानवीय संवेदना, प्रकृति, बाल समस्याएँ।*

प्रस्तावना:

हिंदी के सुप्रतिष्ठित कवि, बालसाहित्यकार, अनुवादक और चिंतक-आलोचक दिविक रमेश की काव्य-साधना पर अनेक महान व्यक्तियों ने विचार करने के पश्चात उनकी कविताओं के वैशिष्ट्य को उद्घाटित किया है। दिविक रमेश एक ऐसे कवि हैं जिनकी कविताओं में यत्र-तत्र लोकभाषा की अभिव्यक्तियाँ पाई जाती हैं। यह उनकी कविता में सायास नहीं, अनायास है। बालकविता की दुनिया में शायद ही ऐसा कोई कवि होगा जिसे प्रथम कविता लिखने के पश्चात अपने ही घर के लोगों द्वारा बेकार साबित कर दिया गया हो। परंतु वे फिर भी लिखते रहे और सफलता की सीढ़ियों पर एक-एक करके आगे बढ़े। दिविक रमेश की कविताओं की सबसे बड़ी सामर्थ्य उनका जीवन के प्रति आस्थावान होना है। दिविक रमेश की कविताओं की अप्रतिम विशेषता सादगी को माना जा सकता है। अक्सर यह सादगी आडंबरहीन रूप में अभिव्यक्त हुई है। आज-कल कवि आकर्षक भाषा का प्रयोग करने के चक्कर में अपनी भाषा को कठिन कर देते हैं। दिविक रमेश अपनी कविताओं में चौंकाने वाली भाषा के प्रयोग से बचते हैं और न ही नए ढंग से अभिव्यक्ति करने की बेचैनी नज़र आती है।उनकी कविताओं में मानव, प्रकृति और प्रेम का अच्छा सम्मिश्रण मिलता है। डॉ. कृपाशंकर चौबे दिविक रमेश की साहित्य साधना पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

"दिविक रमेश की रचना का उत्स प्रकृति है।
लेकिन बिना मानवीय ताप के निरा प्रकृति-संसर्ग उन्हें नहीं भाता।
मानवीय-ताप में भी दुःख-दर्द और संघर्ष वाला हिस्सा उन्हें चाहिए।"[१]

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. बबन चौरे, शोध निर्देशक कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, पाथर्डी

How to cite this article:
चौरे बबन & शेळके दत्तात्रय सोन्याबापु. (2026). दिविक रमेश की उपदेशात्मक बालकविताएँ. Journal of Research and Development, 18(7), 256–259. https://doi.org/10.5281/zenodo.22155630

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.22155630
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

दिविक रमेश की शुरुआती कविताओं के साथ बाद की कविताओं में और फिलहाल जो कविताएँ आ रही हैं, उनमें भी लोक-जीवन के विविध रूपों, उसके संघर्षों और विडम्बनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। दिविक रमेश बालसाहित्य के सिद्धहस्त कवि हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से असंख्य विषयों पर कविताएँ लिखी हैं। दिविक रमेश के कवित्व में प्रौढ़ि झलकती है। उनकी कविता उत्तरोत्तर प्रगाढ़ता के रसायन में बदल रही है। हिंदी कविता के बालसाहित्य रूपी आसमान में दिविक रमेश का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हिंदी कविता के सुधी पाठक उन्हें भली-भाँति जानते और पहचानते हैं। दिविक रमेश की बालकविताओं पर टिप्पणी करते हुए 'मनोज कुमार झा' कहते हैं –

"दिविक रमेश की कविताओं में जो गाँव है,
लोक जीवन की विभिन्न छवियाँ हैं,
सामान्य लोगों का जो दैनंदिन संघर्ष है,
प्रकृति के पल-पल बदलते रूप-रंग हैं, हु
लास के साथ करुणा का जो स्थाई भाव है,
वह उनके अपने जीवन के वास्तविक अनुभवों-अनुभूतियों से उत्पन्न है"[२]

उपर्युक्त पंक्तियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि दिविक रमेश एक ऐसे बाल साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी कविताओं को पहले स्वयं जिया और तदुपरांत पाठकों को उसे समर्पित किया।

दिविक रमेश की उपदेशात्मक बाल कविताएँ :-

बालक जन्म के साथ पूरी तरह से खाली होता है। उसके पास अनुभव, ज्ञान और संवेदना कुछ नहीं होता। समय के साथ-साथ बालक अनेक चीजों को आत्मसात करता है। बालक का सही विकास तभी माना जा सकता है जब उसे सही दिशा में ढाला जा सके। बालक को अन्य शिक्षा-दीक्षा के साथ-साथ उपदेशपरक शिक्षा की आवश्यकता भी होती है। यह कार्य दिविक रमेश जैसे कवियों के माध्यम से बखूबी हो रहा है। २०१९ में जब कोरोना महामारी ने अपने पाँव पूरे देश में मजबूती से जमा लिए थे, ऐसे समय में चारों ओर शोक और डर का माहौल बना हुआ था। परंतु कुछ लोग अपने जीवन को ताक पर रखकर लोगों की सेवा कर रहे थे। यह बातें बच्चों तक पहुँचनी आवश्यक हैं। तभी वे विकट आपदा को भी एक अवसर के रूप में परिवर्तित कर पाएँगे। बच्चों को हमेशा मिल-जुलकर रहना चाहिए, यह बताती हुई मृदुल कुमार सिंह की कविता में सागर के उदाहरण से सुंदर शब्दों में बालकों को समझाया गया है –

"लहर-लहर लहराये सागर,
हम सबके मन को भाये सागर।
कल-कल करती पल-पल बहती,
कितनी नदियाँ आकर मिलती।
मिल-जुल सारे भेद मिटाओ,
जीवन में गहराई लाओ।
चुप-चुप-चुप समझायें सागर
हम सबके मन भाये सागर।"[३]

प्रस्तुत कविता के माध्यम से 'चहल-पहल' नामक हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिका में मई २०२१ में सुंदर शब्दों में बताया गया है कि बालकों का व्यवहार कैसा होना चाहिए। दिविक रमेश ने अपने साहित्य में बालकों की अनेक समस्याओं को लेकर लेखन किया है, उसमें बाल शिक्षा, बाल श्रम, पारिवारिक विच्छेद और बाल अपराध आदि का समावेश बड़ी सुंदरता के साथ किया है।

बाल मजदूरी हमारे देश और समाज के लिए अत्यंत गंभीर विषय बना हुआ है। आज इस बात की बहुत आवश्यकता है कि इस विषय पर बात करने के साथ-साथ हम अपनी जिम्मेदारियों को भी भली-भाँति समझें। बाल मजदूरी को समूल नष्ट करने में अनेक समस्याएँ आती हैं। महत्वपूर्ण समस्या यह है कि बच्चों से यह कार्य उनके माता-पिता के द्वारा ही करवाया जा रहा है। कुछ लोगों ने तो इसे व्यापार के तौर पर स्वीकार किया है। इस स्थिति में परिवर्तन करने हेतु दिविक रमेश लिखते हैं –

"तुम तो जाते पढ़ने लिखने
तुम तो जाते खेल खेलने
हम मजदूरी कर-कर थकते
मन मसोसते, क्या कर सकते।

इन हाथों को देखो साथी
क्या ये लिख पाएँगे पाती?
इनसे तो ईंटें ढोनी हैं,
इनसे तो रोटी पोनी है।"[४]

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

प्रस्तुत कविता के माध्यम से दिविक रमेश समाज में बालकों की स्थिति को दर्शाने का प्रयास करते हैं। जिस उम्र में हाथ में कलम होनी चाहिए, उस उम्र में उन्हें कठिन कार्य करने पड़ते हैं।

बालक अपने मन में अनेक भाव-भावनाओं को संजोकर रखता है। समय-समय पर यह भावनाएँ बाहर निकलती हैं - जैसे अधिक प्रसन्नता में आँखों से आँसू, पीड़ा में दुःख, द्वेष आदि। बालकों को सच्चाई की राह पर चलना सीखना आवश्यक है। उसे सिखाना पड़ता है कि हमेशा ही सच का सहारा लेना चाहिए। समाज में जो नकारात्मक शक्तियाँ होती हैं, उनसे बालकों को दूर रहना चाहिए, नहीं तो इन नकारात्मक शक्तियों के चलते बालकों के विकास में बाधा उत्पन्न होती है। दिविक रमेश अपनी कविता "कृतज्ञ हूँ मैं" में नकारात्मक शक्तियों से दूर रहने के लिए उपदेश करते हैं -

"कृतज्ञ हूँ मैं ओ झूठ कि तुमने बोलने की अनुमति दी,
और एक सच्चा आदमी झूठा करार दिये जाने से पहले बच गया।
कृतज्ञ हूँ मैं ओ जुल्म कि तुमने ढाने दिया खुद को
बिना परवाह किए मेरी आत्मा की और बचा लिया उसे
जिसे बचा लेना चाहिए था जुल्मों से।"[५]

उपरोक्त कविता में कवि ने बालकों के मन से नकारात्मकता को हटाने और सकारात्मकता को स्वीकारने का प्रयास किया है, जो उपर्युक्त पंक्तियों में दिखता है। कवि दिविक रमेश जानते हैं कि बालकों में बालसुलभ चेष्टाएँ होती हैं और समय-समय पर वे अपनी इन्हीं चेष्टाओं का प्रदर्शन भी करते हैं। इन्हीं में से एक होती है - कौन बड़ा और कौन छोटा। दिविक रमेश अपनी कविता 'लोटा-लोटी' में समानता का उपदेश देते हैं। उनके मतानुसार संसार में निवास करने वाली प्रत्येक वस्तु का मूल्य होता है, कोई भी वस्तु मूल्यहीन नहीं होती है।

"लोटी-लोटा थे झगड़ालू, वह गोभी तो वह था आलू,
मुझसे पूछो तो सचमुच में वे दोनों थे मोटू भालू।
झगड़ा था उनका बस चालू, कालू को कह देते लालू,
बात काम की हो तो देखो, बन जाते झट टालम-टालू।"[६]

प्रस्तुत पंक्तियाँ इस बात की साक्ष देती हैं कि बालकों को सभी प्रकार की शिक्षा देने में कवि का कोई सानी नहीं है।

बालक और बालसाहित्य के प्रति आजीवन समर्पित रहे बाल मनीषियों और सर्वश्रेष्ठ बालसाहित्यकारों की जब सूची बनाई जाएगी तो उस सूची में सम्मान के साथ दिविक रमेश का नाम लिया जाएगा। समाज में आर्थिक स्थिति का स्तर एकसमान नहीं है। कुछ लोग आर्थिक संपन्नता से भरे पड़े हैं, तो कुछ लोगों के पास दो जून के भोजन को जुटाने के लाले पड़े हुए हैं। कवि दिविक रमेश समाज की आर्थिक विसंगति पर भी प्रकाश डालते हैं। आर्थिक संपन्नता एवं आर्थिक विपन्नता के बीच जो सदियों से खाई है, उसे अपनी कविता 'वह बच्चा' के माध्यम से वे उजागर करते हैं। सभी बच्चों को शिक्षा व्यवस्था का अंग बनने की आवश्यकता पर वे जोर देते हैं -

"कौन है पापा यह बच्चा जो थाली की झूठन ही खाता।
कौन है पापा यह बच्चा जो कूड़े में कुछ ढूँढा करता।
पापा जरा बताना मुझको, क्या यह स्कूल नहीं है जाता।
थोड़ा जरा डाँटना इसको, नहीं तो कुछ भी यह नहीं पढ़ पाता।"[७]

प्रस्तुत कविता की पंक्तियों में कवि ने बताया है कि बच्चों की पारिवारिक आर्थिक स्थिति का परिणाम उनके विकास पर भी होता है। प्रत्येक बच्चे को अपनी शिक्षा पूरी करने का अधिकार मिलना चाहिए।

बच्चा जन्म के पश्चात परिवार का अभिन्न अंग बन जाता है। परंतु परिवार के साथ-साथ उसका समाज के प्रति भी दायित्व होता है, समाज का कर्ज भी उसे उतारना होता है। दिविक रमेश समाज के प्रति अपने दायित्व को समझते हुए उसका निर्वाह करते हैं। बच्चों की सहज जिज्ञासा को भी अपने साहित्य के माध्यम से शांत करते हैं। पर्यावरण से बच्चों का रिश्ता अटूट होना चाहिए, इसीलिए दिविक रमेश अपने साहित्य में भी पर्यावरण के प्रति बच्चों को जागृत करने का भरसक प्रयास करते हैं। उनकी कविता 'तोड़ ना जाए कोई पेड़' में पर्यावरण के प्रति उनकी आत्मीय भावना का परिचय मिलता है -

"कितने अच्छे कितने प्यारे दोस्त हमारे हैं ये पेड़।
छाया देते ठंडी-ठंडी, रोग भगाते कितने पेड़।
रेगिस्तान न बढ़ने देते, बाढ़ रोकते न्यारे पेड़।
आँखों में हरियाली भरते, झूल-झुलाते अच्छे-अच्छे पेड़।"[८]

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

कवि दिविक रमेश पर्यावरण में पेड़ का महत्व समझते हैं और पर्यावरण में अपना अस्तित्व बनाए रखने में अपना योगदान देते हैं। बच्चों को पेड़ का महत्व समझाते हुए कवि पेड़ों के फायदों को भी समझाते हैं। 'चकमक' नाम की हिंदी पत्रिका में छपी जया नर्गिस की कविता 'ऋतुओं का स्कूल' की कुछ पंक्तियाँ भी अत्यंत महत्वपूर्ण लगती हैं -

"पोस्टमैन है सूरज चाचा, डाक सुबह की लाता है
द्वार-द्वार किरणों की पाती ठीक समय पहुँचाता है।
शाम को खेला करते हम सब रंग-बिरंगे फूलों से
सुंदर-सुंदर तितली के संग, इंद्रधनुष के झूलों से।"[९]

'चकमक' पत्रिका में छपी यह कविता असल में प्रकृति के प्रति अपना स्नेह दिखाने में सक्षम है।

उपदेशात्मक कविता से तात्पर्य यह है कि जिन कविताओं से हमें नैतिक मूल्यों की शिक्षा मिलती है। शिक्षाप्रद विचारों से हम अवगत होते हैं, उन कविताओं को उपदेशात्मक कविताएँ कह सकते हैं। दिविक रमेश की उपदेशात्मक कविता की भाषा भी संक्षिप्त और सटीक है। उनकी उपदेशात्मक कविताओं का मूल उद्देश्य आम तौर पर बच्चों का मनोरंजन करना या उन्हें अपने अनुभवों से संपन्न करना ही नहीं है, बल्कि कविता का सार पाठकों तक पहुँचाना भी है और उसे उन्होंने भली-भाँति किया है।

संदर्भ सूची :-

1. दिविक रमेश निगाहों में, डॉ प्रवीण शर्मा, पृष्ठ क्र.१७
2. दिविक रमेश निगाहों में, डॉ. प्रवीण शर्मा, पृष्ठ क्र.३३
3. सागर, मृदुल कुमार सिंह, चहल-पहल, पृष्ठ क्र.१२
4. 'मधुर गीत भाग -३', दिविक रमेश, पृष्ठ क्र.१८
5. 'चयनित कविताएँ', दिविक रमेश, पृष्ठ क्र.२७
6. 'एक सौ एक बाल कविताएँ' दिविक रमेश, पृष्ठ क्र.१६
7. 'बाल कविताएँ संपूर्ण', दिविक रमेश, पृष्ठ क्र.२५
8. 'समझदार हाथी समझदार चींटी', दिविक रमेश, पृष्ठ क्र.३२
9. 'ऋतुओं का स्कूल', जया नर्गिस, चकमक २०२१, पृष्ठ क्र.२